आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ. राजमती पोखरना सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ राजमती पोखरना सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-115-2
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, डॉ राजमती पोखरना सुराना
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY DR.RAJMATI POKHARANA SURANA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	शहर हुआ बदनाम	6
2.	बात नहीं हुई उनसे	7
3.	कुछ अधूरी बातों का	8
4.	इतना भी ना घर से ना निकलो	9
5.	मुश्किलों का दौर	10
6.	थम गया है सफर	11
7.	सड़क	12
8.	फना	13
9.	मेरी आँखों को मिली सजा	14
10.	ऐ जिंदगी	15
11.	मुफलिसी	16
12.	बिखर गए हैं हम	17
13.	उम्मीद	18
14.	सैनिक और सैन्याणी	19
15.	दे दी हमें मिसाल	20-21

शहर हुआ बदनाम

ऐसा नहीं कि आज मुझे चाँद चाहिए,
वतन में हो खुशहाली मुझे विश्वास चाहिए।

ये जमी ये आसमां ये वतन मुश्किल में है,
जन जन के चेहरे पर मुझे मुस्कान चाहिए।

रहो सभी अपने घरों में महफ़ूज आज,
वक्त की मांग मुझे आज सभी का साथ चाहिए।

ये मत समझो की घर की चारदीवारी में कैद हो तुम,
अमन चैन की बहार लौट आए ऐसी मुझे बात चाहिए।

लौट आयेगी फिर से सभी के दरख्तो में रौनकें,
जन्नत बन जायेगी धरा मुझे सुन्दर संसार चाहिए।

परिंदो की चहक से आज थोड़ा रूबरू हो जाओ,
पंख तुम भी फैला लेना अभी तो मुझे मकान चाहिए।

जिसने भी सुना इस बीमारी के बारे मे तो रोने लगे,
ये शहर बदनाम हुआ अफवाहों से मुझे दुआ सलाम चाहिए।।

बात नहीं हुई उनसे

बात नहीं हुई उनसे बहुत जमाने से,
कैसे ढूंढे हम अब मिलने के बहाने से।

तुम पर ही तो हम दिल लुटा बैठे,
क्या मिला हमें बोलो दिल लगाने से।

मन ने पूछा क्या कोई यहाँ है तेरा,
मन उदास होता रहा उनके आजमाने से।

कहते हैं वो परवाह नहीं है तुम्हें मेरी,
बाज नहीं आते वो गलतफहमी पालने से।

आया करो कभी तुम दिल के आशियाने में,
ये ना हो जाये भूल जाये तुम्हें ना आने से।

बुला भी लिया करो ख्वाबों में मुझे तुम,
खुला रहेगा दरवाज़ा तुम्हारे बुलाने से।

तन्हाईया, खामोशियां बहुत रूलाती है,
क्या मिलता है तुम्हें मुझे तड़पाने से।।

कुछ अधूरी बातों का

कुछ अधूरी बातों का अंत होना जरूरी है,
कभी-कभी जीवन में संत होना जरूरी है।

मजलूमों की आवाज़ से नीर बहते हैं मेरे,
बाजारे-शराफत में बसंत होना जरूरी है।

चुभता है हमेशा सत्य जो तीखा होता है,
दर्द भरे रास्तों का जीवन्त होना जरूरी है।

धर्म के नाम पर बाँट दिया हमने खुदा को,
खुदा की हिफाजत हेतु महंत होना जरूरी है।

वक्त के हाथों की कठपुतलियां है सभी यहाँ,
वैराग्य के मार्ग हेतु अरिहंत होना जरूरी है।।

इतना भी ना घर से ना निकलो

इतना भी ना घर से ना निकलो तुम अब,
वक्त की रफ्तार थम सी गयी है अब।

एक नई सुबह जल्दी ही आयेगी जीवन में,
अंधेरे बदलने लगेगे उजाले में तब हौले से।

बिखर गए हैं आज अपने ही शहर में हम,
साहिल दे रहा है सुकून तभी बेख़ौफ़ है हम।

हौसला बढ़ाते रहिये एक दूसरे का आज तुम,
तूफान है थम जायेगा ना घबराओ आज तुम।

जिदंगी ले रही है सभी का इम्तिहान आज यहाँ,
जीत जायेंगे हम जंग फैलेगी मुस्कान फिर यहाँ।।

मुश्किलों का दौर

मुश्किलों के दौर में आज मेरा संसार है,
छाई है विपदा क्या यही जीवनाधार है।

धैर्यता का हुनर दिखाने की कोशिश करें,
इंसान की जिंदगी का यही सबल आधार है।

जीवन का मेला है ये सुख दुःख आते जाते है
चुनौतियों का सामना कर खुशियाँ अपार है।

मुश्किलों में जो सबका सहयोग कर रहा,
वही मानव सही रूप में जीने का हकदार हैं।

स्वर्ण लंका भी ढह गयी थी अभिमान से,
अभिमान को जो त्यागे वही अच्छा किरदार है।

संयम की कसौटी पर खरा उतरे सभी जन,
मिल जुलकर रहे अन्यथा जीवन बेकार है।।

थम गया है सफर

अजीब सा हो गया है मेरा शहर आज,
जिदंगी का सफ़र थम गया है आज।

कारोबार सुस्ती सा अलसाया अलसाया,
बाजार की रौनक पर लग रहा है विराम।

मिलने की आरज़ू , गुफ्तगु भी खत्म हुई,
अब कहाँ नसीब में है वो सुहानी सी शाम।

खुदा के दर से दरकिनार हुए हम तो यहाँ,
सुनाई कहाँ देती है अब घंटियो की आवाज।

उदास ना हो मलाल न कर ना कोई खयाल कर,
मुरादें मुमकिन होगी तेरी रख तू काम से काम।।

सड़क

मैं सड़क आज कितनी तन्हा हो गई हूँ ,
ना कदमों की आहट तो व्यथित हो गई हूँ।

दर्द से कांप उठती थी पहले आहट से मैं,
पदचिन्हों वाहनों की आवाज अब भूल गई हूँ।

बहुत गुरुर था यारों मुझे सड़क होने पर,
खुदा ये कैसी छाई वीरानी परेशान हो गई हूँ।

दुनिया की गन्दगी से मेरा दामन कभी बेदाग हुआ,
सब बेसफर हो गये जिदंगी के रंगों को भूल गई हूँ।

आज इस दुनिया की बीमारी से हर शख्स टूट गया,
सबके कदमों की आहट को सुनने के लिए व्याकुल हो गई हूँ।

सैकड़ों वाहनों की आवाज और उत्सवों की खुशियाँ,
अब तो हालात ऐसे की खुद में ही सिमटने लग गई हूँ।

फना

फना हो भी जाऊं तेरे इश्क में तू मुझे मिलेगा क्या,
मेरे इश्क का लाल रंग कभी तुम पर चढेगा क्या।

मेरी दिल्लगी को तुम ने मज़ाक बना कर छोड़ दिया,
खुबसूरत फिजाओ में फिर से ये महकेगा क्या।

हम तुम पर बेपनाह प्यार लुटाते रहे अपना मान,
तेरे इश्क का गहरा रंग कभी मुझे संवारेगा क्या।

इश्क से लबरेज़ रहा करती थी नजरें जिनकी,
उन नजरों से मेरी नजरों का मिलन हो पायेगा क्या।

आरज़ू "राज " की हर पल तुम्हें ही पाने की रही,
जख़्म तूने दिल को दिये वो कभी भरेगा क्या।।

मेरी आँखों को मिली सजा

मेरी आँखों को मिली सजा आज रात तेरे ख़ातिर,
ख्वाबों में दीदार की तमन्ना में रोते रहे तेरे ख़ातिर।

आदत नहीं थी किसी से मोहब्बत करने की हमारी,
जुर्म-ए-मोहब्बत मे मिली सजा बेकरार रहे तेरे ख़ातिर।

सजा बन गई है जिदंगी मोहब्बत में हमारी रूसवा हो,
जुर्म तुम से भी हुआ, मुझे ही क्यूँ मिली सजा तेरे ख़ातिर।

अब न तुम्हे याद करेंगे ना कभी प्यार से आवाज़ देंगे,
हर बार उम्मीद रखता है दिल फिर टूटता है तेरे ख़ातिर,

जहान में एक ही शख्स था जिसने "राज" का चैन लूटा,
वफा में लाजमी था अश्को का बहना दिन-रात तेरे ख़ातिर।

ऐ जिंदगी

ऐ जिन्दगी तुझसे.... क्या गिला करुँ,
उलझनों में उलझी है क्या अदा करुँ।

इबादतें इबादतगाह में जा करती हूँ खुदा से,
मुकाम मुकम्मल न होता क्या अजां करुँ।

क़फ़स सी बन कर रह गई जिन्दगी मेरी,
काज़ी बन जा मेरा न अब क्या खता करुँ।

तिश्नगी नहीं रखता दिल तख्त ए ताज की,
खालिस दिल मेरा रूहानी क्या राब्ता करुँ।

अर्जमंद बनने की न कोई चाहत मेरी,
गुमगश्ता हुआ गुलिस्तां क्या चारा करुँ।।

मुफलिसी

मुफलिसी आज जिदंगी की किताब बन कर रह गई,
महामारी से खुशहाल जीवन कहानी बन कर रह गई।

खडा है पंक्तियों में इंसान आज रोटी के चंद हर्फ के लिए,
सवाल बनी है जिदंगी मुफलिसी मौत बन कर रह गई।

मुफलिसी में आज जमाने को सूखी रोटी भी भाने लगीं,
भूख पेट की फलक बिछाये बेलगाम बन कर रह गई।

दरिया दरिया घूम रही है जिदंगानिया कैसे लिखें दास्ताँ,
पाँव ज़मीन पर ही रहते हैं राहें बंद बन कर रह गई है।

अब कौन सुनेगा यहाँ गुर्बत की अनदेखी कहानियाँ,
सन्नाटा पसरा है शहर में खामोशी ताज बन कर रह गई।।

बिखर गए हैं हम

बिखर गए हैं हम
ईश्वर हमें तेरी पनाह में रखना,
खो गये हम ना जाने कहाँ
हम पर वरद हस्त रखना।

दूर तलक छाई वीरानगी
उम्मीदों के मंज़र है बिखरे,
मंजिलों का ना रहा कोई पता,
गुमनाम ना हो जाऊं ऐसी कृपादृष्टि रखना।

परिंदो की चहक जब सुनी तो,
दिल को बडा सुकून सा मिला,
कफस बन कर रह गई है जिदंगी,
जिदंगी को कैद से आजाद रखना।

हे भगवन् जब भी तुझे पुकारूँ,
मै फरियाद ले तेरी चौखट पर आऊँ,
नादान हूँ मेरी अरदास कबूल कर,
हर लम्हा मुझे तू बस महफ़ूज रखना।

बिखर गए हैं हम
ईश्वर हमें तेरी पनाह में रखना।

उम्मीद

हर घर में उम्मीद की किरणों की भरमार हो,
जलते रहे उम्मीद के चिराग ऐसा घर संसार हो।

बदल रही है दुनिया अब तू शोर शराबा ना कर,
कितना गिरेगा इंसान यहाँ अब तो विराम हो।

सूरज की लालिमा जो सवेरे थी वो शाम को कहाँ,
उलझनों और कशमकश के बीच थोड़ा ठहराव हो।

ज़रा सी रात क्या ढली उम्मीदों के मंज़र बिखरने लगे,
हवाओं ने रूख बदला शायद यह उसका नया अंदाज हो।

मेरे शहर में कैद हो गई आज अनगिनत जिंदगियां,
मुफलिसी में कोई ना रहे सबके घरों में अनाज हो।

तमाम उम्र हमें उम्मीद के घेरे में ही रहना है,
डूबना है, उभरना है, चलना है, बढ़ने का अंदाज हो।

धुन्ध सारी मिट ही जायेगी वक्त के साथ साथ यहाँ,
उम्मीदों को रखना क़ायम शायद कोई कोहराम हो।।

सैनिक और सैन्याणी

सैनिक-
माँ भारती पुकार रही, अब मुझको जाना है,
वतन के खातिर मुझे, कर्म पथ पर जाना है।

आखिर वक्त आ ही गया, मुझे सरहद पर जाना है।
विदाई की इस वेला में, आओ तुम को गले लगाना है।

सैन्याणी-
तेरी रूह की महक को, मेरी रूह में समाने दो।
वतन की माटी सी महकती, इस रूह को गले लगाने दो।

सैनिक-
आऊँगा लौट कर एक दिन, खुद को महफ़ूज रखना।
हो सके तो मेरी वर्दी पर, कोई आंच ना आने देना।

सैन्याणी-
मैं इतनी कमजोर नहीं हूँ, मै भी सैनिक की भार्या हूँ।
सरहद की तुम रक्षा करना, मै तेरे घर की सैनिक हूँ।

सैनिक-
मानता हूँ अभी अभी तो, ब्याह कर मै तुम को लाया हूँ।
वक्त गुजारुं संग मैं तेरे, पर संकल्प नहीं भूल पाया हूँ।

सैन्याणी-
कर्तव्य की राह पर बढ़ो, जाओ वतन की हिफाजत करो।
सैनिक हो भारत माँ के, माँ भारती की रक्षा करो।।

दे दी हमें मिसाल

दे दी हमें मिसाल तूने हम हुए जब बेहाल,
हीरा बा के बेटे तूने कर दिया कमाल।
दे दी हमें मिसाल तूने हम हुए बेहाल,
आपत्ति में भी जलती रही तेरे विश्वास की मशाल,
हीरो बा के बेटे तूने कर दिया कमाल।

कोरोना से लड़ी तूने अजब ढंग की लड़ाई,
सब को घर में रहने की मुहिम चलाई
एकता की अजीब दास्तान तूने पढ़ाई,
वाह रे मोदी जी खूब करामात दिखाई
अनुशासन, संयम से रोग को मात दी,
हीरा बा के बेटे तूने कर दिया कमाल।
नमो नमः नमो मोदी।

वायरस ने बिछाया डेरा तो डरा जमाना
लगता था मुश्किल इस वायरस को हराना,
टक्कर थी बड़ी ज़ोर की इस रोग को भगाना,
पर तू भी था मोदी बड़ा उस्ताद पुराना,
बंद किया भारत को चली ऐसी चाल,
हीरा बा के बेटे तूने कर दिया कमाल
दे दी हमें...
नमो नमः नमो मोदी।

मन में था विश्वास तूने एकता की जोत जलाई,
एकांत में रहें यह बात लोगों को समझाई,
बीमारी से लड़ने की लोगों को राह दिखाई,
दूर रहे मास्क पहनकर रहना ये बात बताई
दुनिया की पतवार का तू नाविक बेमिसाल,
हीरा बा के बेटे तूने कर दिया कमाल
दे दी हमें.....
नमो नमः नमो मोदी।

जग में किसी ने कुछ किया मोदी तूने ही किया,
वतन की माटी महकती रहे जी जान लगा दिया,
शंखनाद, तालियाँ, घंटियो का नाद बजा दिया,
दिल की बात कह सबको नई राह चला दिया,
दुनिया वालों की नजरों में बन गया वो मिसाल,
हीरा बा के बेटे तूने कर दिया कमाल
दे दी हमें..
नमो नमः नमो मोदी।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

डॉ. राजमती पोखरना सुराना

E-mail - rajmatisurana@gmail.com

Mobile - 8104639622

समय बड़ा बलवान होता हैं यह हम सुनते आ रहे हैं। ये समय ही है जो राजा को रंक और रंक को राजा बना देता है। जीवन में कब क्या परिवर्तन होने वाला है, हमें पता ही नहीं चलता है। हमने इस सुन्दर प्रकृति के साथ बहुत छेडछाड कर ली। अब समय का पासा ऐसा पलटा की प्रकृति को भी थोड़ा आराम चाहिए, इसलिए सब कुछ लॉकडाउन कर दिया।

इस खतरनाक वायरस की वजह से सबकी जिदंगी थम सी गयी है। पर कैसी भी परिस्थितिया आये, लेखक की लेखनी नहीं रूकती है वह अविराम चलती रहती है।

वर्तमान परिदृश्य को देख मानव के मन में नकारात्मक विचारों का जैसे ढेर लग गया। इन्हीं नकारात्मक विचारों से दूर करने के लिए और मन में सकारात्मकता लाने के लिए मैंने ये कविताएँ लिखने का प्रयास किया है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-115-2

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/